WE
Vol 5 No. 1
June 2024
e-ISSN: 2583-2298

शंघाई सहयोग संगठन में भारत का रणनीतिक हित: ऊर्जा और सुरक्षा

प्रदीप त्रिपाठी

सारांश

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के भीतर भारत के रणनीतिक हित मुख्य रूप से ऊर्जा सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के उद्देश्यों से प्रेरित हैं। एससीओ मंच का लाभ उठाकर, भारत का लक्ष्य अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाना और मध्य एशियाई देशों और रूस से दीर्घकालिक ऊर्जा आपूर्ति सुरक्षित करना है। इसके अतिरिक्त, एससीओ में भारत की भागीदारी आतंकवाद-रोधी और क्षेत्रीय सुरक्षा, विशेष रूप से अफ़गानिस्तान की स्थिरता के संबंध में बहुपक्षीय सहयोग को सुगम बनाती है। एससीओ में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से, भारत क्षेत्रीय प्रभावों को संतुलित करना, अपनी भू-राजनीतिक स्थिति को बढ़ाना और यूरेशियन क्षेत्र की समग्र स्थिरता और सुरक्षा में योगदान देना चाहता है।

1. परिचय

शंघाई सहयोग संगठन (SCO) एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय अंतर-सरकारी संगठन है, जिसमें चीन, रूस, भारत, पाकिस्तान और कई मध्य-एशियाई राष्ट्र जैसे सदस्य देश शामिल हैं। 2001 में स्थापित, SCO सुरक्षा और आतंकवाद से लेकर आर्थिक सहयोग और ऊर्जा सुरक्षा तक कई तरह के मुद्दों को संबोधित करने के लिए विकसित हुआ है। भारत के लिए, 2017 में SCO में शामिल होना यूरेशियन क्षेत्र में अपने भू-राजनीतिक और आर्थिक हितों को बढ़ाने के लिए एक रणनीतिक कदम था। SCO में भारत की भागीदारी दोहरी अनिवार्यताओं से प्रेरित है – ऊर्जा संसाधनों को सुरक्षित करना और क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करना। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में, भारत की ऊर्जा ज़रूरतें काफी हैं और बढ़ती जा रही हैं। SCO के सदस्य देश, विशेष रूप से मध्य-एशिया और रूस के देश, ऊर्जा संसाधनों से समृद्ध हैं, जो भारत को अपने ऊर्जा आयात में विविधता लाने और मध्य-पूर्वी तेल पर निर्भरता कम करने के अवसर प्रदान करते हैं। सुरक्षा के मोर्चे पर, आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद का मुकाबला करने पर SCO का जोर भारत के रणनीतिक हितों के अनुरूप है। अफ़गानिस्तान में अस्थिरता और चरमपंथी समूहों का उदय इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण सुरक्षा चुनौतियाँ पेश करता है। एस.सी.ओ. के ज़रिए भारत खुफिया जानकारी साझा करने, संयुक्त सैन्य अभ्यास और समन्वित आतंकवाद विरोधी प्रयासों पर सहयोग कर सकता है, जिससे उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा बढ़ेगी। यह लेख एस.सी.ओ. में भारत के रणनीतिक हितों की पड़ताल करता है, जिसमें ऊर्जा और सुरक्षा आयामों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह इस बात की जाँच करता है कि एस.सी.ओ. में भारत की भागीदारी कैसे उसके ऊर्जा पोर्टफोलियो में विविधता लाने और क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं को दूर करने में मदद करती है, जिससे एक स्थिर और समृद्ध यूरेशियन क्षेत्र में योगदान मिलता है।

2. ऊर्जा सहयोग

शंघाई सहयोग संगठन (एस.सी.ओ.) के भीतर ऊर्जा सहयोग भारत की अपनी ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास को बढ़ाने की रणनीति का आधार है। एस.सी.ओ. में भाग लेकर, भारत विभिन्न ऊर्जा-संबंधी पहलों और परियोजनाओं में शामिल होना चाहता है जो ऊर्जा की स्थिर और विविध आपूर्ति प्रदान कर सकें। यह सहयोग संयुक्त उपक्रमों, प्रौद्योगिकी विनिमय और बहुपक्षीय ऊर्जा परियोजनाओं सहित कई आयामों में फैला हुआ है। ऊर्जा परियोजनाओं पर एस.सी.ओ. सदस्य देशों के साथ भारत का सहयोग संयुक्त उपक्रमों और रणनीतिक भागीदारी के माध्यम से सुगम होता है। ओ.एन.जी.सी. विदेश और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन जैसी भारतीय कंपनियों के पास रूस और कजाकिस्तान जैसे देशों में तेल और गैस की खोज और उत्पादन में निवेश करने का अवसर है। ये संयुक्त उद्यम न केवल भारत के लिए ऊर्जा आपूर्ति सुरक्षित करते हैं बल्कि विशेषज्ञता और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान की भी अनुमति देते हैं, जिससे भारत के ऊर्जा क्षेत्र की क्षमताएँ बढ़ती हैं।

3. बहुपक्षीय ऊर्जा परियोजनाएँ

बहुपक्षीय ऊर्जा परियोजनाओं में भागीदारी एस.सी.ओ. के भीतर भारत के ऊर्जा सहयोग का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत (TAPI पाइपलाइन जैसी परियोजनाएँ मध्य-एशिया से दक्षिण-एशिया तक प्राकृतिक गैस पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो भारत के लिए एक विश्वसनीय और लागत प्रभावी ऊर्जा स्रोत प्रदान करती हैं। ऐसी परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए SCI सदस्य देशों के बीच घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता होती है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और पारस्परिक आर्थिक लाभ सुनिश्चित होते हैं।

3.1 नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग

SCO भारत को नवीकरणीय ऊर्जा पहलों पर सहयोग करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। मध्य-एशियाई देशों में सौर और पवन ऊर्जा के लिए महत्वपूर्ण क्षमता है, और भारत इन संसाधनों को विकसित करने के लिए नवीकरणीय प्रौद्योगिकियों में अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठा सकता है।

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद

©WE Faculty of Arts

नवीकरणीय ऊर्जा में संयुक्त परियोजनाएँ न केवल भारत के ऊर्जा विविधीकरण में योगदान करती हैं, बल्कि सतत विकास और जलवायु परिवर्तन शमन के प्रति इसकी प्रतिबद्धता के साथ भी संरेखित होती हैं। SCO के भीतर ऊर्जा सहयोग क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता में योगदान देता है। कई ऊर्जा उत्पादकों के साथ जुड़कर, भारत एक ही स्रोत या क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता से जुड़े जोखिमों को कम कर सकता है। यह सहयोग एक अधिक लचीली ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करता है, जिससे भू-राजनीतिक व्यवधानों और बाजार की अस्थिरता के प्रति भेद्यता कम होती है। प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान SCO के भीतर ऊर्जा सहयोग का एक प्रमुख घटक है। भारतीय कंपनियाँ रूस और मध्य-एशिया में अपने समकक्षों द्वारा नियोजित ऊर्जा निष्कर्षण, उत्पादन और वितरण में उन्नत तकनीकों और सर्वोत्तम प्रथाओं से लाभ उठा सकती हैं। यह ज्ञान हस्तांतरण भारत के ऊर्जा क्षेत्र की दक्षता और स्थिरता को बढ़ाता है।

4. संस्थागत तंत्र

SCO ने सदस्य देशों के बीच ऊर्जा सहयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न संस्थागत तंत्र स्थापित किए हैं। इनमें SCO ऊर्जा क्लब शामिल है, जो ऊर्जा नीतियों पर संवाद और समन्वय को बढ़ावा देता है, और SCO व्यापार परिषद, जो निजी क्षेत्र की संस्थाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देती है। इन तंत्रों में भारत की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती है कि उसके हितों का प्रतिनिधित्व किया जाता है और यह क्षेत्रीय ऊर्जा नीति की दिशा को प्रभावित कर सकता है। SCO के भीतर ऊर्जा सहयोग भारत को अपनी ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित और विविधतापूर्ण बनाने, अपनी ऊर्जा क्षेत्र क्षमताओं को बढ़ाने और क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता में योगदान करने के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। संयुक्त उद्यमों, बहुपक्षीय परियोजनाओं और प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान के माध्यम से, भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत कर सकता है और अपने दीर्घकालिक आर्थिक विकास और विकास का समर्थन कर सकता है।

4.1 मध्य-एशियाई संसाधनों तक पहुँच

कज़ाकिस्तान, उज़बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान जैसे देशों से मिलकर बना मध्य-एशिया प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से हाइड्रोकार्बन और खनिजों से समृद्ध है। भारत के लिए, इन संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करना इसकी ऊर्जा सुरक्षा रणनीति और समग्र आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। शंघाई सहयोग संगठन (SCO) भारत को मध्य एशिया के ऊर्जा क्षेत्र में अपनी उपस्थिति और निवेश बढ़ाने के लिए एक आवश्यक मंच प्रदान करता है।

4.2 हाइड्रोकार्बन भंडार

मध्य-एशिया दुनिया के कुछ सबसे बड़े तेल और प्राकृतिक गैस भंडारों का घर है। उदाहरण के लिए, कज़ाकिस्तान तेल का एक महत्वपूर्ण उत्पादक है और इसके तेंगिज़ और काशागन क्षेत्रों में विशाल भंडार हैं। तुर्कमेनिस्तान में प्राकृतिक गैस का दुनिया का चौथा सबसे बड़ा भंडार है, विशेष रूप से गैलिकनिश क्षेत्र में। इन हाइड्रोकार्बन भंडारों तक पहुँच भारत के लिए महत्वपूर्ण है, जो अपने ऊर्जा आयात में विविधता लाने और मध्य-पूर्व पर अपनी निर्भरता कम करने की कोशिश कर रहा है।

5. रणनीतिक ऊर्जा परियोजनाएँ

SCO के माध्यम से मध्य-एशियाई देशों के साथ जुड़ाव भारत को रणनीतिक ऊर्जा परियोजनाओं में भाग लेने में सक्षम बनाता है। ऐसी ही एक परियोजना है तुर्कमेनिस्तान-अफ़गानिस्तान-पाकिस्तान-भारत (TAPI) पाइपलाइन। इस पाइपलाइन का उद्देश्य तुर्कमेनिस्तान से अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान के ज़रिए भारत तक प्राकृतिक गैस पहुँचाना है। TAPI पाइपलाइन से भारत की ऊर्जा सुरक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है, क्योंकि इससे प्राकृतिक गैस की स्थिर और दीर्घकालिक आपूर्ति होगी, जो भारत की अर्थव्यवस्था की बढ़ती ऊर्जा माँगों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है। SCO मध्य एशियाई ऊर्जा क्षेत्र में भारतीय कंपनियों के लिए निवेश के अवसर प्रदान करता है। ONGC विदेश, GAIL और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन जैसी भारतीय कंपनियाँ इस क्षेत्र में तेल और गैस क्षेत्रों की खोज और विकास कर सकती हैं। ये निवेश न केवल ऊर्जा संसाधनों को सुरक्षित करने में मदद करते हैं, बल्कि भारत और मध्य एशियाई देशों के बीच मज़बूत आर्थिक संबंधों को भी बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, पाइपलाइनों और रिफाइनरियों जैसे बुनियादी ढाँचे में निवेश भारत के ऊर्जा बाज़ार को मध्य एशिया के साथ और भी एकीकृत करता है। मध्य एशिया में नवीकरणीय ऊर्जा विकास, विशेष रूप से सौर और पवन ऊर्जा के लिए पर्याप्त संभावनाएँ हैं। इस क्षेत्र के विशाल, धूप वाले परिदृश्य और तेज़ हवा की गति इसे बड़े पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए आदर्श बनाती है। भारत, अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में अपनी विशेषज्ञता के साथ, इन संसाधनों को विकसित करने के लिए मध्य एशियाई देशों के साथ सहयोग कर सकता है। अक्षय ऊर्जा में संयुक्त उद्यम न केवल भारत के ऊर्जा मिश्रण में विविधता लाते हैं, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयासों में भी योगदान देते हैं।

5.1 भू-राजनीतिक और आर्थिक लाभ

एस.सी.ओ. के माध्यम से मध्य एशियाई संसाधनों तक पहुँच भारत की भू-राजनीतिक और आर्थिक स्थिति को बढ़ाती है। मध्य एशिया से ऊर्जा आपूर्ति प्राप्त करके, भारत अन्य क्षेत्रों में भू-राजनीतिक तनावों के प्रति अपनी भेद्यता को कम करता है। इसके अलावा, ऊर्जा सहयोग मध्य एशियाई देशों के साथ भारत के राजनयिक संबंधों को मजबूत करता है, जिससे आर्थिक और रणनीतिक सहयोग के लिए और अधिक रास्ते खुलते हैं। मध्य एशियाई ऊर्जा बाजार में यह एकीकरण भारत को क्षेत्रीय और वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करता है।

© WE Faculty of Arts

6. बुनियादी ढाँचा और संपर्कता

मध्य एशियाई संसाधनों तक पहुँचने के लिए बुनियादी ढाँचे और संपर्कता में सुधार करना महत्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC), भारत, ईरान और रूस को जोड़ने वाला एक बहु-मॉडल परिवहन मार्ग है, जो मध्य एशिया से व्यापार और ऊर्जा आयात को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्षेत्रीय रेल और सड़क नेटवर्क के साथ मिलकर INSTC, मध्य एशिया से अपने बाज़ारों तक ऊर्जा संसाधनों को कुशलतापूर्वक पहुँचाने की भारत की क्षमता को बढ़ाता है। SCO भारत को मध्य एशिया के प्रचुर ऊर्जा संसाधनों, जिसमें तेल, प्राकृतिक गैस और नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता शामिल है, तक रणनीतिक पहुँच प्रदान करता है। ऊर्जा परियोजनाओं, निवेशों और बुनियादी ढाँचे के विकास में संलग्न होकर, भारत एक विविध और स्थिर ऊर्जा आपूर्ति प्राप्त कर सकता है, जिससे उसकी ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास मजबूत होगा। मध्य एशियाई संसाधनों तक पहुँचने के भू-राजनीतिक और आर्थिक लाभ SCO में भारत की सक्रिय भागीदारी के महत्व को और भी रेखांकित करते हैं।

7. सिक्योरिटी इंटरेस्ट

7.1 आतंकवाद विरोधी सहयोग

शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के साथ भारत की भागीदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू आतंकवाद विरोधी सहयोग है। क्षेत्र में आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद से उत्पन्न लगातार खतरों को देखते हुए, SCO सदस्य देशों को सुरक्षा मुद्दों पर सहयोग करने के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान करता है। भारत के लिए, SCO के भीतर आतंकवाद विरोधी सहयोग उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाने और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान देने के लिए आवश्यक है।

7.2 खुफिया जानकारी साझा करना

SCO में भारत की भागीदारी का सबसे महत्वपूर्ण लाभ अन्य सदस्य देशों के साथ व्यापक खुफिया जानकारी साझा करने की क्षमता है। उज्बेकिस्तान के ताशकंद में मुख्यालय वाला क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी ढांचा (RATS) आतंकवादी गतिविधियों, नेटवर्क और आंदोलनों के बारे में सदस्य देशों के बीच खुफिया जानकारी और सूचना के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है। यह सहयोग भारत को संभावित खतरों के बारे में सूचित रहने में मदद करता है और आतंकवादी घटनाओं को रोकने और उनका जवाब देने की उसकी क्षमता को बढ़ाता है।

7.3 संयुक्त सैन्य अभ्यास

SCO द्वारा आयोजित संयुक्त सैन्य अभ्यासों में भारत की भागीदारी सदस्य देशों के सशस्त्र बलों के बीच बेहतर समन्वय और समझ को बढ़ावा देती है। ये अभ्यास आतंकवाद विरोधी अभियानों, शहरी युद्ध और सीमा सुरक्षा पर केंद्रित हैं, जिससे भारतीय सेना अपने सामरिक कौशल और तत्परता में सुधार कर सकती है। इन संयुक्त अभ्यासों से प्राप्त अनुभव भारत की आतंकवाद विरोधी क्षमताओं को बढ़ाने और इसकी रक्षा तैयारियों को मजबूत करने के लिए अमूल्य है।

7.4 कट्टरपंथ और उग्रवाद का मुकाबला करना

एस.सी.ओ. सदस्य देशों को कट्टरपंथ और उग्रवाद सहित आतंकवाद के मूल कारणों को संबोधित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। विभिन्न पहलों के माध्यम से, एससीओ विशेष रूप से कमजोर आबादी के बीच कट्टरपंथ का मुकाबला करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं और रणनीतियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। भारत चरमपंथी विचारधाराओं के प्रसार का मुकाबला करने और आतंकवादी संगठनों में व्यक्तियों की भर्ती को रोकने के लिए प्रभावी उपायों को लागू करके इन पहलों से लाभ उठा सकता है।

7.5 अफगान स्थिति को संबोधित करना

अफगानिस्तान में सुरक्षा स्थिति का क्षेत्रीय स्थिरता और आतंकवाद विरोधी प्रयासों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। एससीओ के सदस्य के रूप में, भारत अफगानिस्तान में अस्थिरता से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अन्य सदस्य देशों के साथ जुड़ सकता है। इस सहयोग में आतंकवादी समूहों के फिर से उभरने को रोकने, अफ़गान शांति प्रक्रिया का समर्थन करने और यह सुनिश्चित करने के प्रयास शामिल हैं कि अफ़गान क्षेत्र का उपयोग क्षेत्र में आतंकवादी हमले शुरू करने के लिए आधार के रूप में न किया जाए।

7.6 कानूनी और विनियामक ढाँचे

SCO आतंकवाद से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सदस्य देशों के बीच कानूनी और विनियामक ढाँचों के सामंजस्य की सुविधा प्रदान करता है। भारत आतंकवाद के विरुद्ध अपने कानूनी उपायों को मज़बूत करने के लिए अन्य सदस्य देशों के साथ सहयोग कर सकता है, जैसे कि आतंकवादी वित्तपोषण, साइबर आतंकवाद और सीमा पार आतंकवाद से संबंधित कानूनों को बढ़ाना। यह सहयोग आतंकवाद के विरुद्ध एक एकीकृत मोर्चा बनाने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि कानूनी खामियों को कम से कम किया जाए।

© WE - Faculty of Arts

8. क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण SCO के भीतर आतंकवाद-रोधी सहयोग के महत्वपूर्ण घटक हैं। सदस्य देश अपने सुरक्षा बलों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए विशेषज्ञता और संसाधन साझा कर सकते हैं। भारत SCO ढाँचे के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और सेमिनारों से लाभान्वित हो सकता है, जो संकट प्रबंधन, फोरेंसिक जाँच और खुफिया विश्लेषण सहित आतंकवाद-रोधी के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

8.1 कूटनीतिक और राजनीतिक समर्थन

एस.सी.ओ. भारत को आतंकवाद विरोधी पहलों के लिए कूटनीतिक और राजनीतिक समर्थन जुटाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। एससीओ चर्चाओं और बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेकर, भारत आतंकवाद के खिलाफ मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग की वकालत कर सकता है और सीमा पार आतंकवाद से निपटने के अपने प्रयासों के लिए समर्थन मांग सकता है। यह कूटनीतिक जुड़ाव वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति को मजबूत करता है और क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा के लिए इसकी प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। एस.सी.ओ. के भीतर आतंकवाद विरोधी सहयोग भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। खुफिया जानकारी साझा करने, संयुक्त सैन्य अभ्यास, कट्टरपंथ का मुकाबला करने, अफगान स्थिति को संबोधित करने, कानूनी ढांचे को सुसंगत बनाने, क्षमता निर्माण और कूटनीतिक जुड़ाव के माध्यम से, भारत अपनी आतंकवाद विरोधी क्षमताओं को बढ़ा सकता है और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान दे सकता है। आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए एससीओ का व्यापक दृष्टिकोण भारत के रणनीतिक हितों के अनुरूप है और राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के उसके प्रयासों का समर्थन करता है।

8.2 अफ़गानिस्तान में स्थिरता

अफ़गानिस्तान की स्थिरता क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के ढांचे के भीतर यह भारत के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बना हुआ है। अफ़गानिस्तान की रणनीतिक स्थिति और संघर्ष और उग्रवाद के प्रति इसकी ऐतिहासिक संवेदनशीलता को देखते हुए, आतंकवाद के प्रसार को रोकने और क्षेत्रीय शांति सुनिश्चित करने के लिए इसकी स्थिरता आवश्यक है। SCO के साथ भारत की भागीदारी अफ़गानिस्तान की स्थिरता से संबंधित बहुआयामी चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। अफ़गानिस्तान की स्थिरता सीधे दक्षिण और मध्य एशिया की सुरक्षा को प्रभावित करती है। आतंकवादी समूहों की उपस्थिति और अफ़गानिस्तान के उग्रवाद का आधार बनने की संभावना क्षेत्रीय स्थिरता के लिए ख़तरा पैदा करती है। भारत के लिए, सीमा पार आतंकवाद को रोकने और क्षेत्र में अपने निवेश और राजनयिक मिशनों की सुरक्षा के लिए एक स्थिर अफ़गानिस्तान महत्वपूर्ण है।

9. सहयोगात्मक सुरक्षा प्रयास

SCO के माध्यम से, भारत अफ़गानिस्तान में सुरक्षा बढ़ाने के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अन्य सदस्य देशों के साथ सहयोग कर सकता है। इसमें खुफिया जानकारी साझा करना, सीमा सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी अभियानों में संयुक्त प्रयास शामिल हैं। एस.सी.ओ. का क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी ढांचा (आरएटीएस) इन सहयोगात्मक प्रयासों को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो अफगानिस्तान से उत्पन्न होने वाली आतंकवादी गतिविधियों की निगरानी और उनका मुकाबला करने में मदद करता है।

9.1 शांति प्रक्रिया के लिए समर्थन

एस.सी.ओ. में भारत की भागीदारी उसे अफगान शांति प्रक्रिया में योगदान देने और उसका समर्थन करने की अनुमति देती है। एससीओ, जिसमें रूस, चीन और पाकिस्तान जैसे प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ी शामिल हैं, अफगानिस्तान में राजनीतिक समाधान प्राप्त करने के उद्देश्य से राजनयिक जुड़ाव और संवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है। भारत की भागीदारी यह सुनिश्चित करती है कि अफगानिस्तान के भविष्य के बारे में चर्चाओं में उसके दृष्टिकोण और हितों पर विचार किया जाए।

9.2 आर्थिक और विकास सहायता

अफगानिस्तान में स्थिरता केवल एक सुरक्षा मुद्दा नहीं है, बल्कि इसके लिए महत्वपूर्ण आर्थिक और विकासात्मक समर्थन की भी आवश्यकता है। भारत, एस.सी.ओ. के माध्यम से, अफगानिस्तान के बुनियादी ढांचे, अर्थव्यवस्था और संस्थानों के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से पहलों की वकालत कर सकता है और उनमें भाग ले सकता है। अफगानिस्तान में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे में भारतीय निवेश काफी बड़ा रहा है, और एस.सी.ओ. इन प्रयासों को अन्य सदस्य देशों के साथ समन्वयित करने में मदद कर सकता है ताकि उनका प्रभाव अधिकतम हो सके।

9.3 नशीली दवाओं की तस्करी से निपटना

अफ़गानिस्तान अफ़ीम का एक प्रमुख उत्पादक है, और नशीली दवाओं का व्यापार आतंकवादी गतिविधियों के वित्तपोषण से निकटता से जुड़ा हुआ है। SCO के माध्यम से, भारत नशीली दवाओं की तस्करी से निपटने के प्रयासों पर सहयोग कर सकता है, जो अफ़गानिस्तान की स्थिरता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण घटक है। नशीली दवाओं की तस्करी के मार्गों

©WE Faculty of Arts

की निगरानी और अवरोधन तथा तस्करी नेटवर्क को नष्ट करने के लिए संयुक्त पहल आतंकवादी संगठनों पर नशीली दवाओं के पैसे के प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक हैं।

9.4 शरणार्थी और मानवीय मुद्दों को संबोधित करना

अफ़गानिस्तान में चल रहे संघर्ष और अस्थिरता ने बड़ी संख्या में शरणार्थियों सहित महत्वपूर्ण मानवीय संकटों को जन्म दिया है। SCO सदस्य देशों को इन मुद्दों को सामूहिक रूप से संबोधित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। भारत मानवीय सहायता प्रदान करने, शरणार्थी आबादी का समर्थन करने और यह सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चर्चाओं और पहलों में शामिल हो सकता है कि विस्थापित व्यक्तियों का चरमपंथी समूहों द्वारा शोषण न किया जाए।

10. क्षेत्रीय अवसंरचना और संपर्क परियोजनाएँ

अफ़गानिस्तान में भारत के रणनीतिक हितों में क्षेत्रीय संपर्क और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना शामिल है। SCO के माध्यम से, भारत अफ़गानिस्तान को दक्षिण और मध्य-एशिया से जोड़ने वाली अवसंरचना परियोजनाओं की वकालत कर सकता है और उनमें भाग ले सकता है। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) और ईरान में चाबहार बंदरगाह का विकास जैसे पहल व्यापार मार्गों और आर्थिक संबंधों को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो अफगानिस्तान की आर्थिक स्थिरता में योगदान करते हैं।

10.1 राजनयिक जुड़ाव और क्षेत्रीय संवाद

SCO अफगानिस्तान पर राजनयिक जुड़ाव और क्षेत्रीय संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है। SCO की बैठकों और चर्चाओं में भारत की भागीदारी यह सुनिश्चित करती है कि वह अफगानिस्तान के संबंध में क्षेत्रीय नीतियों और रणनीतियों को आकार देने में योगदान दे सकता है। यह जुड़ाव सदस्य देशों के बीच आम सहमति बनाने में मदद करता है और अफगानिस्तान के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। अफगानिस्तान की स्थिरता भारत के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है, और SCO इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान करता है। सहयोगात्मक सुरक्षा प्रयासों, शांति प्रक्रिया के लिए समर्थन, आर्थिक सहायता, मादक पदार्थों की तस्करी का मुकाबला करने, मानवीय मुद्दों को संबोधित करने, क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ावा देने और राजनयिक जुड़ाव के माध्यम से, भारत अफगानिस्तान की स्थिरता और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह बदले में, क्षेत्रीय सुरक्षा को बढ़ाता है और दक्षिण और मध्य एशिया में भारत के रणनीतिक हितों के साथ संरेखित होता है। शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के भीतर भारत के लिए क्षेत्रीय प्रभाव को संतुलित करना एक महत्वपूर्ण रणनीतिक उद्देश्य है। SCO की सदस्यता में मध्य एशियाई देशों और पाकिस्तान के साथ-साथ चीन और रूस जैसी महत्वपूर्ण शक्तियाँ शामिल हैं। SCO में भारत की सक्रिय भागीदारी उसे यूरेशिया के जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य को नेविगेट करने की अनुमति देती है, यह सुनिश्चित करती है कि उसके हितों का प्रतिनिधित्व किया जाता है और यह अन्य प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ियों के प्रभाव को संतुलित कर सकता है।

10.2 चीन को संतुलित करना

क्षेत्र में चीन का बढ़ता प्रभाव, विशेष रूप से अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से, भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। जबकि BRI का उद्देश्य क्षेत्रीय संपर्क और आर्थिक एकीकरण को बढ़ाना है, यह दक्षिण-एशिया और मध्य-एशिया में चीन की रणनीतिक उपस्थिति को भी बढ़ाता है। SCO में सक्रिय रूप से शामिल होकर, भारत वैकल्पिक बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं और आर्थिक पहलों को बढ़ावा देने के लिए अन्य सदस्य देशों के साथ काम कर सकता है जो उसके हितों के अनुरूप हों और चीन के प्रभुत्व को संतुलित करें।

10.3 रूस के साथ संबंधों को मजबूत करना

रूस SCO में एक प्रमुख खिलाड़ी है और भारत के साथ उसके लंबे समय से रणनीतिक और रक्षा संबंध हैं। एस.सी.ओ. ढांचे के भीतर, भारत रूस के साथ अपने संबंधों को और मजबूत कर सकता है, इस साझेदारी का लाभ उठाकर चीन के प्रभाव को संतुलित कर सकता है। रक्षा, ऊर्जा और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में रूस के साथ सहयोग भारत की रणनीतिक स्थिति को बढ़ाता है और इस क्षेत्र में एक विश्वसनीय सहयोगी प्रदान करता है।

10.4 मध्य एशिया में प्रभाव बढ़ाना

मध्य एशिया अपने ऊर्जा संसाधनों और भौगोलिक स्थिति के कारण रणनीतिक महत्व का क्षेत्र है। एस.सी.ओ. में भारत की भागीदारी इसे मध्य एशियाई देशों के साथ अपने जुड़ाव को गहरा करने, आर्थिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंधों को बढ़ावा देने की अनुमति देती है। मध्य-एशियाई राज्यों के साथ मजबूत द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंध बनाकर, भारत अपने प्रभाव को बढ़ा सकता है और यह सुनिश्चित कर सकता है कि क्षेत्रीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उसके हितों पर विचार किया जाए।

10.5 पाकिस्तान के साथ जुड़ाव

एस.सी.ओ. में भारत और पाकिस्तान की एक साथ सदस्यता संवाद और जुड़ाव के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करती है।

© WE Faculty of Arts

जबकि दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण बने हुए हैं, एस.सी.ओ. अप्रत्यक्ष संचार और विश्वास-निर्माण उपायों के अवसर प्रदान करता है। एस.सी.ओ. के माध्यम से, भारत क्षेत्रीय सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी चर्चाओं में शामिल हो सकता है, जिससे संभावित रूप से तनाव कम हो सकता है और दक्षिण एशिया में स्थिरता को बढ़ावा मिल सकता है।

11. बहुपक्षीय कूटनीति

एस.सी.ओ. आपसी विश्वास, आपसी लाभ, समानता, परामर्श, सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान और साझा विकास की खोज के सिद्धांतों पर काम करता है। इस बहुपक्षीय मंच में भारत की भागीदारी उसे इन सिद्धांतों का अभ्यास करने और बढ़ावा देने की अनुमति देती है, जिससे एक अधिक संतुलित और स्थिर क्षेत्रीय व्यवस्था में योगदान मिलता है। एस.सी.ओ. के माध्यम से बहुपक्षीय कूटनीति में शामिल होने से भारत गठबंधन बनाने, अपनी पहलों के लिए समर्थन प्राप्त करने और क्षेत्रीय नीतियों को आकार देने में रचनात्मक भूमिका निभाने में सक्षम होता है।

11.1 एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देना

भारत की रणनीतिक दृष्टि एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ संरेखित होती है, जहां एक ही प्रमुख शक्ति के बजाय कई देशों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। एस.सी.ओ. में सक्रिय रूप से भाग लेकर, भारत एक बहुध्रुवीय एशिया के उद्भव का समर्थन करता है, जहां विभिन्न क्षेत्रीय खिलाड़ी, जिनमें वह, चीन, रूस और मध्य एशियाई राज्य शामिल हैं, समान स्तर पर सह-अस्तित्व और सहयोग कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण किसी एक देश के प्रभुत्व को रोकने में मदद करता है और शक्ति के अधिक संतुलित वितरण को बढ़ावा देता है। एस.सी.ओ. सदस्य देशों के साथ आर्थिक और व्यापार संबंधों को बढ़ाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। एस.सी.ओ. आर्थिक पहलों में शामिल होकर, भारत अपनी व्यापार साझेदारी में विविधता ला सकता है और किसी एक देश या क्षेत्र पर आर्थिक निर्भरता कम कर सकता है। एस.सी.ओ. सदस्यों के साथ बढ़े हुए व्यापार और आर्थिक संबंध भारत की आर्थिक वृद्धि और लचीलेपन में योगदान करते हैं, जिससे इसका क्षेत्रीय प्रभाव और मजबूत होता है।

11.2 सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंध

सांस्कृतिक आदान-प्रदान और लोगों से लोगों के बीच संबंध आपसी समझ और सद्भावना बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। एस.सी.ओ. में भारत की भागीदारी सांस्कृतिक कूटनीति, शैक्षणिक आदान-प्रदान और पर्यटन को बढ़ावा देती है, जिससे अन्य सदस्य देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनते हैं। ये बातचीत भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाती है और क्षेत्र में भारत की सकारात्मक धारणा में योगदान देती है। एस.सी.ओ. में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से क्षेत्रीय प्रभाव को संतुलित करना भारत के लिए एक रणनीतिक प्राथमिकता है। चीन के प्रभुत्व को संतुलित करके, रूस के साथ संबंधों को मजबूत करके, मध्य-एशिया में प्रभाव बढ़ाकर, पाकिस्तान के साथ जुड़कर, बहुपक्षीय कूटनीति को बढ़ावा देकर, एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का समर्थन करके और आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देकर, भारत यूरेशिया के जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावी ढंग से नेविगेट कर सकता है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि भारत के हितों की रक्षा की जाए और यह क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि में योगदान दे सके।

12. बहुपक्षीय सहभागिता

शंघाई सहयोग संगठन (एस.सी.ओ.) के माध्यम से बहुपक्षीय सहभागिता भारत के लिए एक रणनीतिक प्राथमिकता है, जो इसे क्षेत्रीय और वैश्विक महत्व के विभिन्न मुद्दों पर देशों के विविध समूह के साथ बातचीत करने की अनुमति देता है। एससीओ की संरचना और उद्देश्य भारत को आर्थिक, सुरक्षा और राजनीतिक चुनौतियों को सहयोगात्मक रूप से संबोधित करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं, जिससे क्षेत्र में इसका प्रभाव बढ़ता है और स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। एस.सी.ओ. के भीतर बहुपक्षीय सहभागिता के प्राथमिक लाभों में से एक क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देना है। संयुक्त पहलों और रूपरेखाओं में भाग लेकर, भारत आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद जैसे आम सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए सदस्य देशों के साथ सहयोग करता है। एस.सी.ओ. की क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी संरचना (आर.ए.टी.एस.) खुफिया जानकारी साझा करने और समन्वित कार्रवाई की सुविधा प्रदान करती है, जिससे भारत और अन्य सदस्यों को सीमा पार आतंकवाद और संगठित अपराध से प्रभावी ढंग से निपटने में मदद मिलती है। एस.सी.ओ. आर्थिक सहयोग और विकास के अवसर प्रदान करता है, जिससे सभी सदस्य देशों को लाभ होता है। भारत मध्य-एशिया, रूस और चीन के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाने के लिए एस.सी.ओ. का लाभ उठा सकता है। एस.सी.ओ. आर्थिक पहलों में भाग लेकर भारत बुनियादी ढांचे के विकास, ऊर्जा सहयोग और क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं को बढ़ावा देता है। ये प्रयास भारत के आर्थिक विकास का समर्थन करते हैं और यूरेशियन क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान करते हैं।

12.1 ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना

ऊर्जा सुरक्षा एस.सी.ओ. के भीतर भारत की बहुपक्षीय भागीदारी का एक प्रमुख पहलू है। यह संगठन भारत को मध्य एशिया और रूस के समृद्ध ऊर्जा संसाधनों तक पहुँचने के लिए एक मंच प्रदान करता है। सहयोगी परियोजनाओं और दीर्घकालिक समझौतों के माध्यम से भारत एक विविध और स्थिर ऊर्जा आपूर्ति हासिल करता है। यह भागीदारी मध्य पूर्वी तेल पर भारत की निर्भरता को कम करती है और इसकी ऊर्जा लचीलापन को बढ़ाती है।

12.2 गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों को संबोधित करना

एस.सी.ओ. नशीली दवाओं की तस्करी, मानव तस्करी और साइबर खतरों जैसे गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों को भी संबोधित करता है। एस.सी.ओ. पहलों में भारत की सक्रिय भागीदारी इन मुद्दों से निपटने के लिए व्यापक रणनीति विकसित करने में मदद करती है। ऐसे खतरों की निगरानी और शमन में सहयोगी प्रयास क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान करते हैं और भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की रक्षा करते हैं।

13. कूटनीतिक संवाद और संघर्ष समाधान

एस.सी.ओ. के भीतर बहुपक्षीय जुड़ाव कूटनीतिक संवाद और संघर्ष समाधान की सुविधा प्रदान करता है। संगठन सदस्य देशों को शांतिपूर्ण तरीकों से विवादों पर चर्चा करने और उन्हें हल करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इन चर्चाओं में भारत की भागीदारी क्षेत्रीय संघर्षों के कूटनीतिक समाधान को बढ़ावा देती है, तनाव को कम करती है और एक सहयोगी माहौल को बढ़ावा देती है। एस.सी.ओ. सदस्य देशों के बीच सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, जिससे आपसी समझ और सद्भावना बढ़ती है। भारत एससीओ ढांचे के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक पहलों, शैक्षिक कार्यक्रमों और अनुसंधान सहयोगों में शामिल हो सकता है। ये आदान-प्रदान लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करते हैं और क्षेत्र में भारत की सकारात्मक धारणा का निर्माण करते हैं। एस.सी.ओ. ने बहुपक्षीय जुड़ाव को सुविधाजनक बनाने के लिए कई संस्थागत तंत्र स्थापित किए हैं। इनमें एस.सी.ओ. राष्ट्राध्यक्ष परिषद, शासनाध्यक्ष परिषद, विदेश मंत्रियों की बैठक और विभिन्न विशेष कार्य समूह शामिल हैं। इन तंत्रों में भारत की भागीदारी सुनिश्चित करती है कि क्षेत्रीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उसके दृष्टिकोण और हितों का प्रतिनिधित्व किया जाए। इन मंचों में सक्रिय भागीदारी से भारत को अपनी रणनीतिक उद्देश्यों के अनुरूप नीतियों और पहलों को आकार देने में मदद मिलती है।

14. रणनीतिक साझेदारी का निर्माण

एस.सी.ओ. के माध्यम से, भारत प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ियों के साथ रणनीतिक साझेदारी बना सकता है और उसे मजबूत कर सकता है। रूस, चीन और मध्य एशियाई देशों के साथ सहयोग भारत के भू-राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाता है और विभिन्न क्षेत्रों में रणनीतिक सहयोग के अवसर प्रदान करता है। ये साझेदारियाँ क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने और संतुलित और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

14.1 क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ावा देना

एस.सी.ओ. के भीतर बहुपक्षीय भागीदारी क्षेत्रीय संपर्क को बेहतर बनाने के प्रयासों का समर्थन करती है। भारत यूरेशिया में परिवहन और संचार लिंक को बढ़ाने वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की वकालत कर सकता है और उनमें भाग ले सकता है। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (आई.एन.एस.टी.सी.) और ईरान में चाबहार बंदरगाह के विकास जैसी पहल इस बात के उदाहरण हैं कि भारत क्षेत्रीय संपर्क और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए अपनी एस.सी.ओ. सदस्यता का लाभ कैसे उठाता है। एस.सी.ओ. के माध्यम से बहुपक्षीय भागीदारी भारत को क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ाने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। एस.सी.ओ. के संस्थागत तंत्र में सक्रिय रूप से भाग लेकर, भारत क्षेत्रीय नीतियों को आकार दे सकता है, रणनीतिक साझेदारी बना सकता है और एक सहकारी और स्थिर क्षेत्रीय वातावरण को बढ़ावा दे सकता है। यह भागीदारी भारत के व्यापक रणनीतिक उद्देश्यों के अनुरूप है और यूरेशियन भू-राजनीतिक परिदृश्य में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में इसकी भूमिका का समर्थन करती है।

15. निष्कर्ष

एस.सी.ओ. में भारत की रणनीतिक भागीदारी ऊर्जा संसाधनों को सुरक्षित रखने और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। मध्य एशियाई और रूसी आपूर्तियों तक पहुँच के माध्यम से ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, एस.सी.ओ. बहुपक्षीय सुरक्षा सहयोग के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान करता है, जिससे भारत को अफगानिस्तान में आतंकवाद और अस्थिरता जैसी साझा चिंताओं को दूर करने में मदद मिलती है। एससीओ में सक्रिय रूप से भाग लेकर, भारत न केवल अपने रणनीतिक प्रभाव को बढ़ाता है, बल्कि एक स्थिर और सुरक्षित यूरेशियन क्षेत्र में भी योगदान देता है। ऊर्जा और सुरक्षा पर यह दोहरा ध्यान एससीओ में भारत की भागीदारी के बहुमुखी लाभों को उजागर करता है, जो एक प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ी के रूप में इसकी स्थिति को मजबूत करता है।

संदर्भ

कुमार, एस.एस. (2013). इंडिया एंड दा शंघाई कोऑपरेशन आर्गेनाइजेशन: इशू एंड कंसर्न. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ चाइना स्टडीज, 4(3), 343-359.

कुंडू, एन.डी. (2009). शंघाई कोऑपरेशन आर्गेनाइजेशन: सिग्नेफिकेन्स फॉर इंडिया. इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, 4(3), 91-101.

©WE Faculty of Arts

खरीना, ओ.ए. (2017). स्ट्रेटेजिक इंटरेस्ट ऑफ इंडिया इन एस.सी.ओ.: एनर्जी एंड सिक्योरिटी. वेस्टनिक आरयूडीएन. इंटरनेशनल रिलेशन, 17(3), 508-517.

गोगना, एस. (2019). एसेसिंग इंडिया इंगेजमेंट इन दा आई.एन.एस.टी.सी. एंड एनालिसिन्ग इट्स इम्पिकेशन ऑन इंडिया कमर्शिकल एंड स्ट्रेटेजिक इंटरेस्ट. स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 43(1), 1-12.

मुडियाम, पी.आर. (2018). दा शंघाई कोआपरेशन आर्गेनाइजेशन एंड दा गल्फ: विल इंडिया प्रेफर अ फदर् वेस्टवार्ड एक्सपेशन ऑफ दा एससीओ औरइट्स कंटयूलिशन, एशियन जर्नल ऑफ मिडिल ईस्टर्न एंड इस्लामिक स्टडीज, 12(4), 457-474.

रॉय, एम.एस. (2012). इंडिया ऑप्शन इन दा शंघाई कोआपरेशन आर्गेनाइजेशन. स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 36(4), 645-650.

स्टॉपडान, पी. (2014). शंघाई कोआपरेशन आर्गेनाइजेशन एंड इंडिया. न्यू दिल्ली: दा इंस्टिट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडीज एंड एनालिसिस.

शर्मा, बी. एंड शर्मा, आर. (2016). इंडिया एससीओ मेंबरशिप-चैलेंज एंड अपोर्च्यूनिटीज. यूनाइटेड सर्विस इंस्टिट्यूशन ऑफ इंडिया.

शर्मा, आर. एंड अत्री, जी. (2023). इंडिया एंड रशिना इन इंटरनेशन आर्गेनाइजेशन: मोटिव्स, स्ट्रेटेजिक एंड आउटकम. एमजीआईएमओ रिव्यु ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन, 16(2), 330-340.

साल्वी, एस.एल. (2018). इंडिया इन दा एससीओ: अपोर्च्यूनिटीज एंड चैलेंज. मध्य प्रदेश जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 23(1), 111-117.

©WE-Faculty of Arts